

Für Platzgerfründe

Marsch von Hans Hänni

arr. Hanspeter Schärli

2

5 5 4 5 | 5 5 4 5 | 5 5 4 5 | 5 5 4 5 | 5 5 4 5 | 5 5 4 5

6 6 5 6 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6

4 5 5 5 | 4 5 5 5 | 4 5 5 5 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6

6 6 5 6 | 6 3 5 2 | 6 6 5 6 | 5 5 4 5 | 5 5 4 5

5 5 4 5 | 5 5 4 5 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6 | 6 6 5 6

6 6 5 6 | 6 6 5 6 | 7 7 6 7 | 7 7 6 7 | 5 6 6 6

5 6 6 6 | 4 4 4 4 | 5 5 5 5 | 6 3 5 2 | 6 6 5 6

2

6 3 5 2 | 6 6 5 6 | 7 7 6 7 | 6 8 3 5 | 7 7 4 7 | 6 7 5 6

1.

6 3 5 2 | 6 6 5 6 | 7 7 6 7 | 6 8 3 5 | 7 7 4 7 | 6 7 5 6